SHORT DURATION DISCUSSION

The proposal to set up SEZ in Nandigram, West Bengal and consequent large scale Violence

श्रीमती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश): उपसभापति जी, सबसे पहले तो मैं चेयरमैन साहब के प्रति और आपके प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगी कि आप दोनों ने स्वयं पहल करके इस गंभीर विषय पर चर्चा करने का रास्ता निकाला और दो दिन से जो सदन की कार्यवाही बाधित चल रही थी, उसे समाप्त करके सदन का कामकाज शुरू करवाने का एक वातावरण पैदा किया।

उपसभापति जी, संसद का यह शीतकालीन सत्र जब शुरू हुआ था, तब तक नंदीग्राम व्यापक हिंसा की आग में झुलस चुका था। इसलिए यह बहुत स्वाभाविक था कि हम सबसे पहले आपसे यह मांग करते कि शुरुआत में ही नंदीग्राम पर चर्चा होनी चाहिए, लेकिन मुझे दु:ख है और आश्चर्य भी कि हमारे CPM के साथियों ने इसे कानून-व्यवस्था का साधारण, राज्य का विषय बताकर चर्चा कराने में अपनी आपत्ति दर्ज कराई ...(**व्यवधान**)

SHRIMATI BRINDA KARAT (West Bengal): Sir, that is not correct. ...*(Interruptions)*... The CPI(M) has not said that. ...*(Interruptions)*... He said, "It was may privilege for a discussion under the rules of Parliament. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let us know what she wants to speak. ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI BRINDA KARAT: Sir, under the rules of Parliament, let her not distort the CPI(M) stand. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, यह तो बाहर के टीवी गवाह हैं। हमारे कामरेड सीताराम येचुरी जी ने बाहर कहा कि कानून और व्यवस्था का विषय राज्य का विषय है। मैंने तो उससे कुछ अलग कहा नहीं ... (**व्यवधान**)... तो इन्होंने यह कहकर आपत्ति दर्ज कराई कि यह राज्य का विषय है तो मैंने यही बोला राज्य की कानून-व्यवस्था का विषय बताकर चर्चा पर आपत्ति दर्ज कराई, इसमें मैंने गलत क्या कहा।

श्री सीताराम येचुरी (पश्चिमी बंगाल): सर, बिल्कुल गलत कहा है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी..

श्री सीताराम येचुरी: मेरा नाम लेकर बोला गया ...(**व्यवधान**) इसीलिए मैं उठा, वरना मैं नहीं उठता।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. ...*(Interruptions)*... Please sit down.

श्री सीताराम येचुरी: ये गलत distort न करे।

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, अंदर आप साक्षी हैं।

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं, मुझे साक्षी मत बनाइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, मैं यह कहना चाहती हूं कि सारा देश जिस घटना पर उद्वेलित हो, जिस घटना पर पश्चिमी बंगाल के बुद्धिजीवी कोलकाता की सड़को पर उतरने को मजबूर हो जाएं, जिस घटना को राज्यपाल गैर-कानूनी और अस्वीकार्य मानें, जिस घटना को कोलकाता का उच्च न्यायालय असंवैधानिक और अनुचित करार दे, क्या वह राज्य की कानून-व्यवस्था का साधारण विषय होता है? मैं आपकी धन्यवादी हूं कि आप दोनों ने विषय की गंभीरता को समझा और हम लोगों को चर्चा की अनुमति दी।

उपसभापति जी, आज हम देश में बनने वाले विशेष आर्थिक जोनों के संदर्भ में नन्दीग्राम की चर्चा कर रहे हैं, लेकिन मैं प्रारंभ में आपको यह बात कह दूं कि विशेष आर्थिक जोन की बहस के आयाम बहुत बड़े हैं, उस बहस का फलक भी बहुत बड़ा है, किंतु आज विशेष आर्थिक जोन का संदर्भ में नंदीग्राम के सिलसिले में केवल इतना प्रश्न है कि क्या बड़े उद्योगों को स्थापित किए जाने के लिए कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण किया जाना

चाहिए और यदि किसान अपनी भूमि के अधिग्रहण का विरोध करते हुए आंदोलित हों, आंदोलन करें, तो क्या हिंसा का सहारा लेकर उन्हें खदेड़ने और मारने का काम किया जाना चाहिए? उपसभापति जी, नंदीग्राम एक वर्ष मे तीन बार हिंसा का शिकार हुआ है और यह एक संयोग है कि तीनों ही बार मुझे अपनी पार्टी की तरफ से नंदीग्राम जाने का अवसर मिला है। इसलिए मैं जो कुछ इस सदन मे कहूंगी वह न तो सुनी-सुनाई बात है, न वह अखबारों, रिपोर्टों में पढ़ी-पढ़ाई बात है बल्कि मेरी बानगी एक प्रत्यक्षदर्शी की बानगी होगी, जो कहूंगी वह सच्ची, सही और आंखों देखी कहानियों पर आधारित होगी।

श्री शाहिद सिद्दिकी (उत्तर प्रदेश): कहानियां ...(**व्यवधान**)...

†[**شری شاہد صدیقی:** کہانیاں ۔مداخلت۔]

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, कहानी नहीं होगी, इसलिए मैंने कहा उस पर आधारित होगी। आप लोग अच्छी तरह सुनिए कि क्या बोला। मैंने बोला, जो कहूंगी वह सच्ची, सही और आंखों देखी घटनाओं पर आधारित होगी, कहानी नहीं है। दिक्कत यह है कि आप लोग इसको कपोल-कल्पित कहानियां समझ रहे हैं।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया (झारखंड): उपसभापति जी, कहानी सच्ची भी होती है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, जिस चश्मे से देखा, उसी चश्मे से रखूंगी, यहां सामने दिखाऊंगी, उस चश्मे से आपको शीशा दिखाऊंगी ...(**व्यवधान**)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Nothing will go on record. ...*(Interruptions)*... Nothing will go on record.

SHRI ABU ASIM AZMI (Uttar Pradesh): *

श्री उपसभापति: आप बैठिए, बिल्कुल नहीं, आप बैठिए ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, सबसे पहले नंदीग्राम में जनवरी मास में हिंसा भड़की और मैं स्वयं अपनी पार्टी के तीन सांसदों का एक शिष्टमंडल लेकर नंदीग्राम गई। उस समय घटना का केन्द्र था सोनाचूड़ा गांव। नंदीग्राम होते हुए हम लोग सोनाचूड़ा पहुंचे। पूरा का पूरा गांव सड़क पर था—महिलाएं, बच्चे, बूढ़े। वहां बैठकर एक चीज जो मैंने देखी, वह मैं सदन को बताना चाहूंगी। हमने आंदोलन बहुत देखे हैं, देश में आजादी के बाद भी आंदोलन हुए हैं, उसके पहले के आंदोलनों की कहानियां पढ़ी हैं, नंदीग्राम का आंदोलन एक ऐसा आंदोलन है उपसभापति जी, जो जाति, धर्म, लिंग और उम्र की सीमाओं को पार कर गया है। इन हदों को उसने तोड़ दिया है। हिंदू-मुस्लिम, दलित-सवर्ण, महिला-पुरुष, बूढ़े-नौजवान और बच्चे, सब के सब इस आंदोलन के सांझीदार हैं। वहां एक तख्त बिछा था, वहां जाकर हम बैठ गए एकदम से एक विशाल जनसभा का स्वरूप बन गया। 70 प्रतिशत उसमें महिलाएं थीं, 70 प्रतिशत से ज्यादा। हर महिला उंगली पकड़े हुए थी बच्चे की या दूध पीते हुए बच्चे को गोद में लिए हुए थी। कोई खौफ नहीं था उनके चेहरे पर, कोई भय नहीं था, उनके चेहरे पर केवल एक इच्छा दिखाई देती थी, अपनी जमीन को बचाने की। उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने वहां ''भूमि उच्छेद प्रतिरोध समिति'' का गठन किया है कि पूरा का पूरा गांव अपनी जमीन को बचाने के लिए उसका सदस्य बन गया है ओर पूरी जनसभा में दो नारे थे—पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री और सी॰पी॰एम॰ के सांसद का नाम लेकर, जो लोक सभा के हैं, क्योंकि वहां तीन लोगों की मौत उस हिंसा में, उस बार हुई थी जनवरी में। खड़े होकर, उन दोनों का नाम लेकर ''फांसी दो, फांसी दो'' का नारा था और पूरा गांव खड़े होकर कह रहा था—''प्राण देबो, रक्त देबो, मान इज्जत देबो, आमरा जमीन देबो ना, आमरा जमीन देबो ना''—वे एक ही बात कह रहे थे कि प्राण देंगे, रक्त देंगे, खून देंगे, मान और इज्जत भी दे देंगे, लेकिन अपनी जमीन नहीं देंगे, नहीं देंगे, नहीं देंगे। जिन तीन लोगों की मौत हुई थी, उनमें से दो के परिवारों ने आकर मंच पर ही माइक से अपनी व्यथा सुनाई थी। एक बालक मरा था, तेरह-चौदह वर्ष का। लोगों ने कहा कि उसके परिवार वाले आ नहीं सके, आप उनके घर जाइए। हम उनके घर गए थे। वह दृश्य हमें अभी भी भूलता नहीं है। इस समय भी वह बात करते हुए मेरे

*Not recorded.

†[Transliteration in Urdu Script.]

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

रोंगटे खड़े हो रहे हैं तेरह-चौदह वर्ष का वह बालक मरा था और उस दिन उसका छोटा भाई, जो शायद आठ-नौ वर्ष का रहा होगा, सिर मुंडाए, धोती पहने, ऊपर से नंगे बदन, एक जनेऊ लटकाए अपने भाई का श्राद्ध कर रहा था। उसकी मां दहाड़े मार-मार कर रो रही थी। मुझे उसे संभालना मुश्किल हो रहा था, शायद जिंदगी में पहली बार मैंने असहायता का अहसास किया था, क्योंकि उस पछाड़े खाती मां को ढाढ़स बंधाने के लिए कोई शब्द मेरे पास नहीं थे। सोनाचूड़ा से हम लोग नंदीग्राम आए। वहां बहुत से पत्रकार खड़े थे। उन्होंने हमें कहा कि आपको खुशी होगी, नंदीग्राम के इस आंदोलन के बाद पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री ने यह कहा है कि पश्चिम बंगाल में नंदीग्राम के लोगों से कह दो—''नोटिफिकेशन छेड़िदीन, छेड़िदीन'' यानी कि वे नोटिफिकेशन को फाड़ दें, हमने भूमि अधिग्रहण का निर्णय वापस ले लिया है। तो मैंने उन पत्रकारों से कहा कि वे गांव वालों को क्यों कह रहे हैं कि छेड़िदीन, छेड़िदीन, नोटिफिकेशन फाड़ दो? यह तो उनके अपने हाथ की बात है, वे नोटिफिकेशन वापस ले लें। गांव वाले क्यों फाड़ेंगे? वे नोटिफिकेशन अगर वापस ले लें, तो गांव वालों को फाड़ने की आवश्यकता ही नहीं होगी। तो मैंने कहा कि मैं आपके ही माध्यम से मुख्य मंत्री जी को सलाह देती हूं कि अगर उन्होंने यह निर्णय वापस ले लिया है, तो गांव वालों को आश्वस्त करने के लिए वे नोटिफिकेशन withdraw कर लें और जो withdrawal की कॉपी है, वह गांव में भेज दें। सच कहती हूं इस समय यहां कि मैं आश्वस्त होकर लौटी थी उस समय। मुझे लगा था, जितना मैं बुद्धदेव जी को जानती हूं, मेरे अच्छे स्नेहिल संबंध हैं उनसे। उन्हें मैं एक संवेदनशील व्यक्ति मानती थी, वे साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति हैं, मुझे लगा कि यह बात अखबार में छप जाएगी और बात भी सच है कि अगर वे कह रहे हैं कि नोटिफिकेशन फाड़ दो और फैसला वापस ले लिया है, तो वे नोटिफिकेशन वापस भी ले लेंगे और मैं स्वयं में आश्वस्त होकर लौटी थी, लेकिन दो महीने भी नहीं बीते, मार्च के महीने में, मिड मार्च, 14 तारीख को दोबारा नंदीग्राम में हिंसा भड़की और आधिकारिक तौर पर सरकार ने 14 लोगों के मरने की पुष्टि की। उस समय आडवाणी जी के नेतृत्व में पूरे एनडीए का एक प्रतिनिधि मंडल नंदीग्राम गया। उस प्रतिनिधि मंडल में भी मैं शामिल थी। वापस घटना का केन्द्र सोनाचूड़ा था। हम फिर सोनाचूड़ा पहुंचे। इस बार 1000-1500 लोग मिलने के लिए आए। जो कहानी टीवी पर दिखायी जा रही थी—वह नौजवान भी हमसे मिलने आया जिसके हाथ से भाई का शव वर्दीधारियों ने छीन लिया था। वह लड़का हमसे मिलने आया। उसने कहा कि मुझे समझ में नहीं आता, मेरी आंख के सामने मेरे भाई को गोली लगी। मैंने उसकी डेड बॉडी को—पता नहीं वह मरा था या नहीं—अपनी बाहों में लेकर भागना चाहा, लेकिन उसका वह शरीर भी—जो मृत था या उस समय तक जीवित था—मेरे हाथ से छीन लिया गया। आज तक मुझे नहीं पता कि वह शरीर कहां है। वह उसके बाद मरा या जिंदा था, मेरे पास से वह ले लिया गया—मुझे नहीं मालूम वह कहां है। वहां लोगों ने यह कहा कि पुलिस तो आयी लेकिन पुलिस के साथ कोई एम्बुलेंस नहीं आयी। जिनके ऊपर गोलियां चलीं, जो घायल हो गए, उन्हें हम कंधों पर उठाकर अस्पताल ले गए या साइकिल पर एक आदमी पीछे बिठाकर अस्पताल ले गया लेकिन कोई एम्बुलेंस नहीं थी जिस पर हम घायलों को ले जा सकते और शायद उन्हें बचा सकते। वहां हमने उनसे पूछा कि घटना शुरू कैसे हुई? हम सुनकर हैरान हुए। वहां के लोगों ने बताया कि उस दिन गौरांग महाप्रभु का जन्मदिन था। वे चैतन्य महाप्रभु का विग्रह लेकर भजन कीर्तन कर रहे थे। इतने में अचानक पुलिस आयी और दनादन-दनादन उन्होंने गोलियां चलानी शुरू कर दीं। वहां बच्चे और महिलाएं थीं जो कीर्तन कर रहे थे। वहां पर 14 लोगों के मरने की पुष्टि तो स्वयं सरकार ने की है। ...(व्यवधान)... इसमें मैंने ऐसी कौन-सी बात कही जो ये लोग हंस रहे हैं? उपसभापति महोदय, जो हंस रहे हैं उन्होंने ही अपने हस्ताक्षरों से एक खुला पत्र सारे सांसदों को भेजा है। मैं पूरी जिम्मेदारी से इस सदन में खड़े होकर कह सकती हूं कि यह खुला पत्र तथ्यों से दूर असत्य का पुलिंदा है। मैं बताती हूं कि 14 मार्च की घटना के लिए कामरेड सीताराम येचुरी ने अपने हस्ताक्षरों से इसमें क्या लिखा है। 14 मार्च की घटना का उल्लेख पृष्ठ नम्बर 9 पर है। "Earlier, in March, when scores of offers of talks fell on deaf ears, the Government sent in a team of police to repair the roads and ensure links of Nandigram with the rest of the State. The police were attacked." यह उन्होंने कहा है, the police were attacked. "The police tried to pacify and disperse the crowd by appeal through loudspeakers. Then women and children were brought to the front without their consent. Armed hooligans were to the rear, as was shown on TV channels. Tear gas shells were brought, but did not have the desired effect. The appeals were

ignored. In the ensuing police firing, eight people were killed; another six people were killed in other injuries. ये 14 लोगों के मरने की पुष्टि कर रहे हैं।

श्री सीताराम येचुरी: बिल्कुल सही है।

श्री यशवंत सिन्हा (झारखंड): आप जो कहेंगे, वही सही है? ह्यूमेन राइट्स कमीशन सही नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं सीताराम येचुरी जी से केवल एक सवाल करती हूं ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please allow her to speak.

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ: If this is the truth, I have one simple query to Shri Sitaram Yechury. अगर पुलिस पर आक्रमण किया गया था, अगर पुलिस ने सेल्फ डिफेंस और अपने बचाव में गोलियां चलायी थीं तो 14 लोगों के मरने की पुष्टि आप कर रहे हैं, क्या एक पुलिस अधिकारी मारा गया, क्या एक पुलिस अधिकारी घायल हुआ? उपसभापति जी, पुलिस वालों को खरोंच तक नहीं आयी।

श्री सीताराम येचुरी: 27 घायल हुए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: इस बार कह रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... पुलिस को एक खरोंच तक नहीं आयी। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: इनके पास पूरी पुलिस की रिपोर्ट है। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप जब बोलेंगी तब अपनी बात कहिए। उनको मैं कैसे रोक सकता हूं? ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, 14 मार्च की इस घटना के बाद बहुत फैक्ट फाइंडिंग कमेटीज नंदीग्राम गयी थीं। ऐसी एक कमेटी की रिपोर्ट मेरे पास है, ''नंदीग्राम ऐंड सिंगूर—बाय जस्टिस ऑन ट्रायल'' इसमें सात लोग थे, दो फॉर्मर जजिज थे। इन सात लोगों ने यह रिपोर्ट हमें नहीं सौंपी, तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम को सौंपी थी। जो प्रश्न मैंने किया है, वह प्रश्न जस्टिस ऑन ट्रायल ने, उन लोगों से पूछा—''क्वेश्चन दैट अराइज'' एक पूरा पन्ना इसमें है। उन्होंने एक सवाल पूछा है: "If the Police acted in self-defence, how is it that 14 people have been killed and a lot many injured in the Police firing, and not a single Policeman injured?" यह सवाल आज मैं नहीं पूछ रही हूं, यह सवाल जस्टिस ऑन ट्रायल ने अपनी रिपोर्ट में पूछा है। और दूसरा सवाल पूछा है: "When women including minors were assaulted, physically tortured and raped, why did Womens' Commission, either from the State Government or from the Centre, visited the site and not react? Why is there no such kind of order or action taken by the State Government?" और मैंने जो बात गौरांग महाप्रभु की कही, सबसे पहले उन लोगों ने वह बात कही है, "People of Nandigram had gathered to performa *puja* of *Gorang* on 14th March, 2007 being the birthday of *Gorang*. What was the propriety of the West Bengal Government to send on that day a huge Police force duly armed?" यह सवाल आज मैं नहीं पूछ रही हूं, ये जितनी फैक्ट्स फांइडिंग्स कमेटीज गई हैं उन्होंने इनसे यह सवाल पूछा है। इसलिए मैंने यह कहा था कि यह तथ्यों से दूर असत्य का पुलिंदा है, मुझे ये जवाब दें कि Police were attacked, अगर पुलिस पर आक्रमण हुआ था और पुलिस वहां की रोड रिपेयर करने के लिए गई थी, जबकि रोड रिपेयर करने के लिए पुलिस नहीं जाती है। रोड रिपेयर करने के लिए पी॰डब्ल्यू॰डी॰ के लोग जाते हैं। रोड रिपेयर करने, पुल बनाने अगर पुलिस वहां गई तो एक भी एम्बुलेंस साथ लेकर नहीं गई थी, एक भी मजिस्ट्रेट साथ लेकर नहीं गई थी, वरना हमेशा पहले मजिस्ट्रेट पुलिस फायरिंग का आदेश देता है उसके बाद फायरिंग होती है और ये कहते हैं कि Police were attacked. मैं आप लोगों से पूछना चाहती हूं। हम नंदीग्राम की इस पुलिस फायरिंग के बाद सोनाचूड़ा की इस घटना को देखने के बाद अस्पतालों में गए थे। Tamluk के अस्पताल में गए, नंदीग्राम के अस्पताल में गए, वहां हमें जितने लोग मिले उन्होंने जो हृदय विदारक और मर्मस्पर्शी कहानियां सुनाई थीं वे आज तक हमारा दिल दहलाती हैं। वहां मेरी दो महिलाओं से प्रत्यक्ष भेंट हुई थी जिनके साथ बलात्कार हुआ था। उनमें से एक महिला ने मुझे कहानी सुनाई थी कि पुलिस

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

को देखकर डरकर वह अपने घर के पिछवाड़े बनी गौशाला में छिपने के लिए भागी थी लेकिन दरिन्दों ने गौशाला में भी उसका पीछा किया और वहीं उसके साथ सामूहिक बलात्कार करने का काम किया। मैं पूछना चाहती हूं अपनी बहन वृंदा कारत से कि वे महिलाओं के विषय को लेकर बहुत जुझारू हैं और अगर देश के किसी कोने में भी महिलाओं के साथ कोई घटना घटती है तो आप वहां जाती हैं और उसको सदन में पूरी शिद्दत के साथ उठाती हैं। तो क्या आपकी भेंट उन महिलाओं से हुई, क्या आप एक बार सोनाचूड़ा गई, क्या आप अस्पतालों में गईं ...(व्यवधान)

श्रीमती वृंदा कारत: अभी उन्होंने मेरा नाम लिया ...(व्यवधान) या तो नाम मत लीजिए और अगर नाम ले रही हैं तो जवाब सुनिए। ...(व्यवधान)

श्रीमती सुषमा स्वराज: बोलिएगा, मैं तो चाहूंगी कि आप बोलें। लेकिन मैं कहना चाहती हूं कि उन महिलाओं के साथ बलात्कार हुआ क्योंकि यह कहा जाता है कि उनका नाम यहां नहीं लिया जाए इसलिए मैं उनका नाम नहीं ले रही हूं लेकिन जब मैंने वहां के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट से पूछा कि क्या इन केसेज में बलात्कार हुआ है, जो उन्होंने उसकी पुष्टि की और बताया कि इन दोनों केसेज को हमने जो यहां जब सी॰बी॰आई॰ थी उनको बतला दिया है कि उनके साथ बलात्कार हुआ है। लेकिन उस समय वहां जाने की किसी ने जरूरत नहीं समझी क्योंकि वह पश्चिम बंगाल का केस था, क्योंकि वह नंदीग्राम और सोनाचूड़ा का केस था।

उपसभापति जी, 14 मार्च की इस घटना के बाद सी॰पी॰एम॰ के लोगों की बहुत आलोचना हुई, वामपंथियों ने की, इनके सहयोगियों ने की तथा इसके खिलाफ में सम्पादकीय भी लिखे गए और संसद में भी आवाजें उठीं। उस समय मुझे यह लगा था कि चलिए, 14 लोगों की बलि तो हुई है लेकिन शायद नंदीग्राम 14 लोगों की बलि लेकर शांत हो जाएगा। मैं एक जगह बैठी थी और वहां पांच-सात लोग बैठे थे। तो मैंने उनसे कहा कि बुरा तो बहुत हुआ, अधिकारिक तौर पर ये 14 कह रहे हैं इसलिए मैं 14 कह रही हूं जबकि वहां लोग तो सैकड़ों की बात करते थे। वहां लोग तो कहते थे कि लोगों को मारकर नदियों में डाल दिया है और उनके ऊपर चील, गिद्ध घूम रहे हैं जिससे पता चलता है कि यहां ज्यादा लोग मारे गए हैं। लेकिन मैं 14 की ही बात कर रही हूं क्योंकि सरकारी पुष्टि 14 लोगों की हुई थी। तो मैंने कहा कि चलो कम से कम अब नंदीग्राम की भूमि के अधिग्रहण का मामला तो समाप्त हुआ और शायद इससे बाकी जगहों के एस॰ई॰जैड॰ में भी जो कृषि योग्य भूमि ली जा रही है उनका मामला भी समाप्त हो जाएगा। क्योंकि मैं आपको यह कहना चाहती हूं उपसभापति जी, अगर आपको कभी नंदीग्राम जाने का मौका मिले तो आप वहां जाकर उस भूमि के दर्शन करिए जिसे हम हरी-भरी वसुंधरा कहते हैं या बंगाली में जिसे धनधान्य वसुंधरा कहते हैं वह हरी-भरी वसुंधरा का साक्षात प्रतीक है। वहां पान की खेती होती है, वहां धान की खेती होती है, वहां तीन-तीन फसल ली जाती हैं। चारों तरफ इतना सौम्य वातावरण, इतना रमणीक वातावरण कि आदमी की आत्मा में कुछ होता है जब यह कहा जाता है कि यह भूमि उद्योग के लिए ले ली जायेगी। इसलिए मुझे लगा कि चलिए, वह भूमि तो बची वहां पर एक साथी बैठे थे, उन्होंने कहा कि सुषमा जी फिर आप कम्युनिस्टों को जानती नहीं है। आपको लगता है कि नंदीग्राम शांत हो गया, नंदीग्राम भड़केगा और दोबारा इससे ज्यादा बुरी तरह से भड़केगा। उन्होंने मुझे कहा कि आप शायद नहीं जानती हैं इसलिए कह रही हैं, आप जिन्हें प्हाजी कहती हैं, अहलुवालिया जी को, आप उनसे पूछना, वह इनका असली चरित्र जानते हैं वह आपको बतायेंगे। लेकिन मैं सच कहती हूं कि मैंने प्हाजी से नहीं पूछा, क्योंकि मैं मन में कहीं न कहीं आश्वस्त थी कि बुद्धदेव भट्टाचार्य के नेतृत्व में शायद नंदीग्राम में दोबारा यह नहीं होगा। जैसा कि मैंने आपसे कहा कि मैं उनको बहुत ही ज्यादा संवेदनशील व्यक्ति मानती थी। जब मैं I & B मिनिस्टर थी, तब मेरा उनसे डायरेक्ट राब्ता रहता था, मुझे पता लगा कि वह कभी भी डायरेक्ट अपने घर आफिस से उठकर सीधे नहीं जाते, पहले कोई न कोई नाटक, पहले कोई न कोई फिल्म देखकर जाते हैं, जो व्यक्ति इतनी साहित्यिक रूचि का है, वह कैसे इतनी हिंसा को बर्दाश्त करेगा। सच कहती हूं, खड़े होकर, मेरा मन आश्वस्त था, मैंने प्हाजी से भी नहीं पूछा कि क्या नंदीग्राम में दोबारा आग लगेगी। लेकिन आज कहती हूं कि मेरा अंदाजा गलत साबित हुआ। वह कहने वाला व्यक्ति सही था, मैं गलत थी। सात महीने बाद दोबारा नंदीग्राम में हिंसा भड़की है, बहुत योजनाबद्ध तरीके से भड़की है। उपसभापति जी, मैं कहना चाहती हूं कि इस बार की हिंसा

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

ने पिछले सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। इसी 13 नवम्बर, 2007 को आडवाणी जी के नेतृत्व में दोबारा एनडीए का एक पूरा प्रतिनिधि मंडल नंदीग्राम गया, मैं फिर उसमें शामिल हुई इस बार घटना का केन्द्र सोनाचूड़ा नहीं था, इस बार घटना का केन्द्र था अधिकारीपाड़ा और सतंगाबाड़ी। हम लोग अधिकारीपाड़ा गए और एक बुनियादी अंतर मुझे दिखायी दिया। जनवरी महीने में पूरा गांव सड़कों पर, मार्च महीने में हजार-पन्द्रह सौ लोग बेखौफ बोलते हुए, लेकिन इस बार पूरा गांव दहशतजदा। कोई घर से निकलने को तैयार नहीं, कोई बात करने को तैयार नहीं, जैसे ही हम लोग गाड़ी से उतरे एक महिला मेरे पास आई उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, जैसा कि स्वाभाविक है, मैंने पहला सवाल पूछा, आपका नाम क्या है, उसने कहा कि मेरा नाम मत पूछो। मैंने कहा कि क्यों, वह बोली नाम छप गया तो मार डालेंगे। केमरामैन सामने था, तो वह बोली इनको कह दो, मेरी फोटो नहीं खींचे। मुझे बोली इधर आओ, वह मुझे एक तरफ ले गयी, क्योंकि मेरे साथ बाकी पुरुष थे। वह मुझे एक तरफ ले गयी और मेरे कान में केवल फुसफुसाते हुए कहा—यहां बहुत नौजवान महिलाओं के साथ में बलात्कार हुआ है, सिर्फ तुम्हें यह कहने के लिए आयी थी और यह कहकर वह कहां गायब हो गयी मुझे नहीं मालूम। सारा अधिकारीपाड़ा घूमते-घूमते हम लोग वापिस आए तो हमने देखा कि एक घर के आगे सात-आठ महिलाएं खड़ी थीं, मुझे लगा कि शायद वे महिलाएं बोलेंगी। मैं स्वयं उनके पास जा पहुंची। एक बूढ़ी मां खड़ी थी, मैंने उससे पूछा—कुछ तो बताओ, हम लोग इतनी दूर से आए हैं। गृह मंत्री जी, उसने मुंह खोलकर केवल इतना कहा था, क्या बताऊं तीन दिन से मेरा बेटा घर नहीं आया। इतने में उसकी बहू आयी, वह उसका हाथ खींचकर ले गयी, मत बोल, मार डालेंगे, मत बोल। यह घटना मैंने अपनी आंख से देखी है। अधिकारीपाड़ा से हम नंदीग्राम आ गये। लोगों ने कहा कि वहां जाइये, वहां एक रिफ्यूजी कैम्प है, वहां लोग बोलेंगे। हम रिफ्यूजी कैम्प में गये, आडवाणी जी की गाड़ी आगे थी, मेरी गाड़ी थोड़ी पीछे थी। आडवाणी जी मुझसे पहले पहुंच गए थे। मैंने वहां जाकर देखा कि आठ औरतें उनके पांव में गिरी हुयी थीं। वह बार-बार कह रहे थे, वे चरण पीछे हटा रहे थे, लेकिन वे पांव से उठ नहीं रहीं थीं। मैंने एक महिला को उठाया, गले लगाया, पूछा क्या बात है, एक ही शब्द सबके मुंह से था। हमारे स्वामी ला दो, हमारे स्वामी का पता लगा दो। स्वामी वहां पति को कहते हैं। अभी मुझे लोकमत टाइम्स के एक अखबार, मैं तो लेकर नहीं आयी थी, यहां विजय दर्डा जी ने भेजी है, उसमें वह फोटो छपी है, वह महिला मेरे गले लगी हुयी है, वह एक ही बात कहती है कि मेरे स्वामी का पता लगा दो।...(**व्यवधान**)...

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): स्वामी नहीं सामी है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: आप बंगाली है, इसलिए उस भाषा को सही से बोल सकती हैं । वह मुझे सुनने में कान में स्वामी लगा।...(**व्यवधान**)....

श्री उपसभापति: ठीक है, ठीक है।...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उससे क्या फर्क पड़ता है। जया जी, उससे क्या फर्क पड़ता है? स्वामी या सामी रहेगा तो पति ही ना। दोनों का अर्थ पति होता है ना। वह अपने पति के लिए कह रही थी स्वामी का पता लगा दो। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती जया बच्चन: मतलब बहुत से होते हैं।...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: शुद्ध बंगाली बोल कर करना क्या है, जब बंगालियों की रक्षा नहीं कर सकते?...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मुझे मालूम नहीं था कि मैं इतनी गंभीर बात कहूंगी, तो उसको इतनी हल्की, लाइट कहकर उसका विषयांतर कर दिया जाएगा। एक लड़का हमारे सामने था और उसने कहा सुषमा जी, मेरी मां को तो मार दिया, पिता का पता नहीं है, कम से कम मेरे पिता का पता लगा दो। इसको भी बंगाली में कुछ और कहते होंगे, लेकिन दोनों बातों का अर्थ यही था, औरतें कह रही थीं कि हमारे पति का पता लगा दो और लड़का कह रहा था मेरे पिता का पता लगा दो। उनको मालूम नहीं था कि उनके पिता और पति कहां गायब कर दिए गए हैं। उस रिफ्यूजी कैम्प में दो हजार से ज्यादा लोग खड़े थे कि वहां से उठना भारी हो गया। मैंने आडवाणी जी से कहा कि यहां से चलिए, हम यहां खड़े रहकर इनके लिए कुछ नहीं कर सकते, बाकी कार्यक्रम खत्म

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

करिए। हम सीधे राज्यपाल के पास चलते हैं, हम और कुछ करें या न करें, लेकिन हम कम से कम गवर्नर से इस बारे में कहते हैं कि इनके पिता और पति का पता लगाकर दें । हम यह कह कर वहां से चले आए। वे सतंगावाड़ी के लोग थे, वहां पर 340 घर जला दिए गए हैं। वे घर से जुदा हुए लोग थे और वे उस नन्दीग्राम के रिफ्यूजी कैम्प में रह रहे थे। यह वह घटना है, जो हम 13 नवम्बर का देखकर आए हैं। मैं आप लोगों से यह पूछना चाहती हूं कि इस पूरी घटना की निंदा करने के बजाए, हमारे वामपंथी साथी, वैसे मैं वामपंथी कहूं तो गलत होगा क्योंकि उनके सहयोगी दल भी उनकी आलोचना कर रहे हैं, हमारे सीपीएम के साथी, इस पूरी घटना का औचित्य ठहराने में लगे हैं। वह कहते हैं कि ये तो माओवादी हिंसा के लोग हैं, हिंसक हैं और नृशंसक हैं। उन्होंने यहां आकर डेरा डाल लिया है, कैप्चर कर लिया है, हमारे लोग तो वहां रि-कैप्चर करने के लिए गए थे। इस बहस के दौरान मैं कुछ प्रश्न उठाना चाहती हूं, जिनका जवाब मुझे सीपीएम के वक्ता से भी चाहिए और जिनका जवाब मुझे गृह मंत्री जी से भी चाहिए। मेरा पहला सवाल यह है कि क्या वाकई वहां माओवादी हैं? उपसभापति जी, चीफ मिनिस्टर कहते हैं, 'Eye for an eye should be the principle. We have paid them back in the same coin.' इसका मतलब है कि वे माओवादियों की उपस्थिति की बात करते हैं, लेकिन उसी पश्चिम बंगाल का गृह सचिव कहता है, वहां कोई माओवादी नहीं है, 'not a single Maoist is there.' मुझे एक भी माओवादी के होने की जानकारी नहीं है। मेरा सबसे पहला प्रश्न यह है कि माओवादियों की उपस्थिति पर जो प्रश्न चिन्ह लगाया गया है, उसमें सत्य क्या है और मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि माओवादियों पर आखिर सीपीएम और कांग्रेस की सोच क्या है? कॉमरेड सीताराम येचुरी, जब नेपाल में माओवादी हिंसा करते हैं, तो आप माओवादियों के वार्ताकार बनकर नेपाल पहुंचते हैं।...(**व्यवधान**)... आप कॉमरेड प्रचंड को सरकार में शामिल होने का न्यौता देते हैं, उसमें शामिल होने वाली बात करते हैं और यहां आप पूरे का पूरा पैराग्राफ Maoist role पर लिखते हुए इस खुले पत्र में कहते हैं कि झारखंड के रंजीतपाल ने पूरा का पूरा आपरेशन आर्गनाइज किया है क्यों, कॉमरेड प्रचंड के लिए, सरकार, कामरेड झारखंड के विरुद्ध हथियार, ये दो-मुंही बातें कह कर...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप बैठिए, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... आप बैठिए।...(**व्यवधान**)... आप जवाब दीजिए।...(**व्यवधान**)... बैठिए, बैठिए, आप बैठिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: ये दो-मुंही बातें कह कर किसे धोखा देना चाहते हैं? मैंने कौन सी बात गलत कही है? क्या सीताराम येचुरी जी नेपाल नहीं गए थे?...(**व्यवधान**)... उपसभापति जी, मैं यह पूछती हूं...(**व्यवधान**)।

श्री उपसभापति: पाणि जी, ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, क्या कॉमरेड सीताराम येचुरी नेपाल नहीं गए थे? क्या ये माओवादियों के प्रतिनिधि बनकर नहीं गए थे? क्या उनको सरकार में बनाने का न्यौता देने नहीं गए थे, क्या माओवादियों की तरफ से वार्ता के लिए नहीं गए थे? मेरा दूसरा सवाल कांग्रेस से है कि माओवादियों के प्रति आपकी क्या सोच है? कल यहां सवाल उठाया जा रहा था। मैं यहां कोई पुरानी बात नहीं कर रही हूं और न ही कोई पुरानी स्पीच निकाल रही हूं। उपसभापति जी, केवल 24 घंटे बीते हैं, कल यहां संयोग से एक सवाल शोभना भरतिया जी का माओवादी हिंसा को लेकर था। उनके प्रश्न का उत्तर गृह मंत्री जी दे रहे थे। उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए जब गृह मंत्री ने कहा कि वे वहां पर पुलिस लगा रहे हैं, इंटेलिजेंस के लिए पैसा दे रहे हैं और हथियार खरीदने के लिए राज्य सरकारों को पैसा दे रहे हैं, ताकि इस तरह की हिंसा समाप्त हो। तब इन्हीं की पार्टी के एक सदस्य और आन्ध्र प्रदेश कांग्रेस के पूर्वाध्यक्ष श्री केशव राव खड़े होकर एक पूरक प्रश्न पूछ रहे थे। क्या पूछ रहे थे, जरा मैं बता दूं। यहीं कहा है, इसी में है, सभी ने सुना है। गृह मंत्री के जवाब से उन्हें संतोष नहीं हो रहा था, तो वे शुरू कैसे करते हैं "Sir, there cannot be a more perplexing paradox than the answer given by the hon. Minister. At one stage, you people say that it is a socio-economic problem, यह केशव राव कह रहे हैं "at another, you want the entire House to take credit and be proud of the money that you are giving to the States and kind of intelligence they are building up and the battalions they are sending in. उसके बाद वे पूछते हैं, जब चेयरमैन साहब ने कहा कि सीधे सवाल पूछो तो उन्होंने कहा, "I would rather put it positively. Are you thinking on the lines of having a new approach to the

issue?" यह मैं नहीं पूछ रही हूं कि क्या आपकी सोच बदल गई है, क्या आप नई अप्रोच लेकर आए हैं, यह आंध्र प्रदेश कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष, इस सदन के सम्मानित सांसद केशव राव, कल 21तारीख को पूछ रहे हैं। "Andhra Pradesh has brought it down by, not by 60 per cent, but 83 per cent. But, do not equate it with terrorism. Naxalism is not terrorism at all. It is wrong to say. It is wrong to do so. It is only the rural activists' voice against exploitation in those areas. Let it not be equated with extremism or terrorism." मैं पूछना चाहती हूं, गृह मंत्री जी, आप यहां बैठे हैं, आपको बताना होगा कि माओवादी के प्रति आपकी सोच क्या है? क्योंकि केशव राव जी ने तो यह बात यहां कही और इसी सरकार के संसदीय कार्य मंत्री ने कल माओ-त्से-तुंग को महिमामंडित करते हुए यह कहा है कि हिंदुस्तान का हर नौजवान, चाहे वह किसी भी पोलिटिकल पार्टी का हो, उन्होंने कहा कि चाहे वह बी.जे.पी. का ही क्यों न हो, उसे माओवादी कविताएं प्रेरित करती हैं, उसे माओवादी विचारधारा प्रेरित करती है। यह आप लोग कहते हैं। सी॰पी॰एम॰ वाले कहते रहे हैं कि माओवादियों की विचारधारा तो सही प्रेरणा से प्रेरित है, उनकी कार्य शैली में फर्क हो सकता है। आप कहते हैं कि आप क्या करने गए थे...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: हम जो कहते हैं हमसे सुनिए, आप मत बोलिए...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: सोशल-इकोनॉमिक, they say it is a socio-economic problem, कल तक यह सामाजिक-आर्थिक समस्या थी, आज जब अपने घर में सेंध लगी तो सुर बदल गया। आप कह रहे हैं कि आप क्या करने गई थीं...(**व्यवधान**)... उपसभापति जी, जहां तक हमारा सवाल है, हमारे नेता लाल कृष्ण आडवाणी जी ने यह कहा था कि पशुपति से लेकर तिरुपति तक एक रेड कॉरीडोर इस देश में बनने जा रहा है। उसे किसी भी राजनीतिक दल का समर्थन नहीं मिलना चाहिए। लेकिन हमारी कठिनाई यह है कि पशुपति में कामरेड सीताराम येचुरी माओवादियों से जाकर वार्ता करते हैं और तिरुपति में कांग्रेस वाले नक्सलियों से हाथ ...(**व्यवधान**)... मिलाकर ...(**व्यवधान**)... मिलते ...(**व्यवधान**)...हैं ...(**व्यवधान**)... जहां तक हमारा सवाल है, पशुपति से लेकर तिरुपति तक हर जगह माओवादियों के खिलाफ़ हैं, जहां तक हमारा सवाल है, मैं यह रिकॉर्ड कराना चाहती हूं...(**व्यवधान**)...

श्रीमती वृंदा कारत: महिमामंडित कर रही हैं...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उपसभापति जी, जहां तक हमारी पार्टी का सवाल है, हम माओवादियों की विचारधारा के विरोधी हैं, हम माओवादियों की कार्य शैली के भी विरोधी हैं। हम न माओवादी विचारधारा से आकृष्ट होते हैं, न उनकी कार्य शैली को मान्यता देते हैं। मेरा तीसरा सवाल गृह मंत्री जी से है। गृह मंत्री जी, यदि मैं एक मिनट, केवल बहस के लिए यह मान लूं कि यहां माओवादी हैं, assume for the assumption sake, only for an academic debate मैं यह मान लूं कि वहां माओवादी हैं तो मैं देश के गृह मंत्री से यह पूछना चाहती हूं कि क्या माओवादी हिंसा से निपटने का यह तरीका मान्य है? मेरा आपसे सवाल है, क्योंकि आप माओवादियों से निपटने की कार्य योजना तैयार करते हैं। आपने बहुत बार सर्वदलीय बैठक बुलाई है। आपसे बहुत बार यह सवाल किया जाता है, कल भी सदन में यह सवाल किया गया था, जो कार्य योजना आप तैयार कर रहे हैं क्या उसमें इस योजना पर, इस मैथड पर, इस तरीके पर केंद्र सरकार सहमति की मोहर लगाती है कि सुरक्षा तंत्र को एक तरफ करके, पुलिस प्रशासन को एक तरफ करके, हर राजनीतिक दल के काडर को यह स्वतंत्रता दी जाएगी कि वह वर्दी पहनकर हथियार पकड़कर या बिना वर्दी पहने शस्त्र लेकर माओवादियों से निपटे। क्योंकि यह तरीका पश्चिम बंगाल के नंदीग्राम में सरे आम अपनाया जा रहा है। वे इस हिंसा का औचित्य ठहरा रहे हैं। इसलिए मेरा आपसे प्रश्न है कि क्या माओवादी हिंसा से निपटने का यह तरीका केंद्र सरकार मान्य करती है और क्या वह इसे अपनी कार्य योजना का हिस्सा बनाएगी? क्या बाकी राजनीतिक दलों के लोगों को भी वह इस तरह की स्वतंत्रता देगी, क्योंकि नंदीग्राम में पता नहीं माओवादी हैं या नहीं, यह एक प्रश्न चिह्न है। लेकिन इस देश में एक हकीकत है कि इस देश के 150 से ज्यादा जिले आज माओवादी हिंसा से ग्रस्त हैं। पशुपति से तिरुपति तक जिस रेड कॉरिडोर की बात आडवाणी जी ने की है, वह एक हकीकत बन चुकी है, वह एक जमीनी सच्चाई है। क्या इस रेड कॉरीडोर को समाप्त करने के लिए यह तरीका केन्द्र सरकार मान्य करेगी, यह मेरा आपसे अगला सवाल है?

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

उपसभापति जी, सच्चाई यह है कि सीपीएम का नेतृत्व अपरिपक्व हाथों में आ गया है और इसलिए इनको यह लगता है कि सीपीआई(एमएल) की हिंसक गतिविधियों के सामने ये अप्रासंगिक हो गए हैं। तभी ये जेएनयू में भी चुनाव हारते हैं। सीपीआई(एमएल) जीतती है सीपीएम हारता है। इसी कारणा से ये आज एक ऐसी जगह आकर खड़े हो गए हैं, जहां इन्हें अपनी नीति समझाने में मुश्किल पैदा हो रही है। उस रिवोलुशन के बदले ये किंडर गार्टन रिवोलुशनरीज़ रिवोलुशन करना चाह रहे हैं। ये भूल गए हैं कि क्रूरता क्रान्ति नहीं होती, लेकिन ये क्रूरता से क्रान्ति का बीज बोने जा रहे हैं। यही कारण है कि इन्हें अपनी बात समझाने में मुश्किल हो रही है। कॉमरेड येचुरी, मैं पूछना चाहती हूं कि यह पत्र लिखने की नौबत क्यों आई? आपने पहले वाक्य में यह स्वीकारा है, ''क्योंकि एक तरफा रिपोर्टिंग हो रही है, किसी को हमारी बात समझ नहीं आ रही, इसलिए हम यह खुला पत्र लिख रहे हैं।'' क्यों नहीं समझ में आ रही? हमें समझ में न आए, आप कह सकते हैं कि हमने तय कर लिया है कि हम आपकी बात समझेंगे नहीं, हम आपके विरोधी हैं। आपके अपने लोगों को समझ में क्यों नहीं आ रही? कॉमरेड अशोक मित्रा 60 साल तक आपके कॉमरेड-इन-आर्म्स रहे हैं। अशोक मित्रा लिखते हैं—"The Party is over". अशोक मित्रा लिखते हैं—"Nandigram exposes arrogance and ineptitude of CPI(M). महाश्वेता देवी आपका विरोध करती हैं। गौतम घोष कहते हैं कि मुझे अपने आपको वामपंथी कहते हुए शर्म महसूस होती है। रितुपर्णो घोष सड़क पर उतरते हैं। मौसमी चटर्जी अपना पुरस्कार वापस करती हैं। मैं पूछना चाहती हूं कि आपके अपने रूलिंग लेफ्ट फ्रंट में से आलोचना की आवाजें उभर रही हैं—आखिर क्यों? हम आपकी बात न समझें, यह तो समझ में आता है, क्यों नहीं आप अपनी बात अपने सहयोगियों को समझा पा रहे हैं? क्यों पश्चिम बंगाल के बुद्धिजीवियों को सड़क पर उतर कर एक-एक लाख लोगों का प्रदर्शन करना पड़ता है? सच्चाई यह है कि तर्क आपके साथ नहीं है, तथ्य आपके साथ नहीं है,सत्य आपके साथ नहीं है, इसीलिए आप लोगों को अपनी बात समझा नहीं पा रहे हैं।

उपसभापति जी, ये अपनी इस पुस्तक के अंत में कहते हैं कि वहां अब सीआरपीएफ आ गई है, इसलिए सब कुछ ठीक हो गया है। इससे बड़ा असत्य कुछ हो सकता है। सीआरपीएफ के डीआईजी ने तो जाने के सात दिन बाद यह कहा कि मैं केवल अनवांटेड क्रिमिनल्स की लिस्ट मांग रहा हूं, वहां का एसपी मुझे यह भी मुहैया नहीं करवा रहा। सीआरपीएफ के डीआईजी अपने आपको असहाय पा रहे हैं और आप कहते हैं कि वहां सब कुछ ठीक हो गया है। कल कोलकाता में क्या हुआ? कल नंदीग्राम और तस्लीमा नसरीन, दोनों का मिक्स था वह। यहां सदन की कार्यवाही बाधित हुई, सदन को पहले स्थगित करना पड़ा। आप कहते हैं कि सीआरपीएफ के जाने के बाद सब कुछ ठीक हो गया है...(**व्यवधान**)... इसमें कहा, मैं दिखाती हूं। यह देखिए—"With the CRPF moving in on 4th November, the situation has come under the control of the Administration". यह कहा। आप ही का लिखा हुआ है, यह किसी और का नहीं है। अपना पत्र निकालिए और पृष्ठ 13 पढ़िए ...(**व्यवधान**)... अंग्रेजी तो केवल आपको आती है, मुझे तो न अंग्रेजी आती है न बांगला आती है। जसवन्त सिंह जी को शायद आपसे ज्यादा अंग्रेजी आती है। जसवन्त सिंह जी, इसका क्या अर्थ होता है कि स्थिति नियंत्रण में आ गई? सर, आपको तो अंग्रेजी आती है, इसका क्या अर्थ होता है?

श्री उपसभापति: थोड़ी-थोड़ी आती है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: स्थिति काबू में आ गई, इसका अर्थ यही अर्थ होता है न! सर, "Situation has come under the control of the Administration" का क्या अर्थ होता है? मुझे तो अंग्रेजी का जितना हिन्दी अनुवाद आता है, यही आता है।

डॉ॰ मुरली मनोहर जोशी (उत्तर प्रदेश): इसका अर्थ होता है कि सिच्युएशन एडमिनिस्ट्रेशन के कंट्रोल में नहीं, एडमिनिस्ट्रेशन सिच्युएशन के कंट्रोल में आ गया है।

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, बताइए, इसका क्या अर्थ है। सर, वहां सिच्युएशन कंट्रोल में आ ही नहीं सकती। इसलिए सिच्युएशन कंट्रोल में नहीं आ सकती कि ''वही मुंसिफ, वही मुजरिम, यही जल्लाद भी हैं, अकरबां मेरे, करें खून का दावा किस पर''। यही मुंसिफ हैं, यही मुजरिम हैं, यही जल्लाद हैं, तो कैसे आएगी एडमिनिस्ट्रेशन

के कंट्रोल में सिच्युएशन? आ ही नहीं सकती। इसलिए मैं गृह मंत्री जी से कहना चाहती हूं कि कल उन्होंने कहा कि हमने 355 के तहत निर्देश दिए हैं। शायद 355 शब्द का इस्तेमाल न किया हो, लेकिन आपको क्या लगता है कि उन निर्देशों की अनुपालना होगी या हो रही है? यह आज के इंडियन एक्सप्रैस की हैड लाइन है। आपने कल निर्देश देते हुए क्या कहा था? मैंने आपको टीवी पर बोलते हुए भी देखा था, जिस वेदना, जिस फर्मनैस और जिस दृढ़ता के साथ आप यह कह रहे थे कि हमने कह दिया है, हर व्यक्ति को अपना घर मिलेगा, किसी को भी वहां से इविक्ट नहीं किया जाएगा, सबको वापस भेजा जाएगा। सर, यह इंडियन एक्सप्रैस की आज की खबर है। "Meanwhile, largest refugee camp at Ground Zero faces closure. School headmaster, also CPM member, says inmates illegal, have to leave."

उपसभापति जी, गृहमंत्री जी देश की संसद में, लोकसभा में खड़े हो कर यह कहते हैं ''हमने कह दिया है, किसी को घर से उजाड़ा नहीं जाएगा'' और यह रिपोर्ट कहती है कि उजड़े हुए लोगों को, जिन्हें रेफ्यूजी कैम्प में रखा गया है, वहां से सीपीएम का एक हैडमास्टर उजाड़ रहा है। वह कह रहा है तुम इल्लीगल हो, यहां से जाओ ...(**व्यवधान**)... आपके निर्देशों की अनुपालना...(**व्यवधान**)... आपके निर्देशों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। यह पेपर सुषमा स्वराज नहीं लिखती है और न ही इसे लिखने वाला भाजपा का कोई कॉरस्पांडैंट है। इंडियन एक्सप्रैस की साइड लीड है कि रेफ्यूजी कैम्प जो ग्राउंड ज़ीरो में बना है,वहां की सीपीएम का स्कूल हैडमास्टर यह कह रहा है कि तुम इल्लीगल आए हो, यहां से भाग जाओ। यानी पतंगबाजी से उजड़े, घर जलाए गए रेफ्यूजी कैम्प में रहे, देश के गृह मंत्री कहते हैं कि वापस घरों में भेजो, किसी को उजाड़ो मत और यहां उजड़े हुए लोग जो रेफ्यूजी कैम्प में रह रहे हैं, उनको सीपीएम का हैडमास्टर उजाड़ कर कहता है कि घर जाओ, तुम यहां पर इल्लीगली रह रहे हो। यह है आपके निर्देशों की अनुपालना?

गृह मंत्री जी, मैं आपसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हूं, मैं सरकार की मजबूरी समझ रही हूं, क्योंकि आपके जो सहयोगी दल हैं वे आपको परेशानी में डालते रहते हैं, आपको लगता है कि कहीं कुछ और कर लिया तो मुसीबत में डाले जाएंगे और सरकार चार दिन पहले चली जाएगी। मैं कहना चाहती हूं कि लोगों की जिन्दगियों के बदले अगर सरकार चली जाए तो चली जाए, लेकिन लोगों को बचाना आपका धर्म है। इसलिए, उपसभापति जी, मैं आपसे कहना चाहती हूं, मेरी आपसे यही मांग है अब 355 से कुछ नहीं होगा, 355 के निर्देशों की धज्जियां उड़ गईं, इसलिए अब 356 लगाइए, राष्ट्रपति शासन लगाइए ...(**व्यवधान**)... राष्ट्रपति शासन लगाइए और जो वहां पर पीड़ित हैं उनको न्याय दीजिए, मुआवजा दीजिए और जो वहां पर दोषी हैं, उन्हें बेलिहाज़ा दंडित कीजिए।

उपसभापति जी, मैं एक निवेदन आपसे भी करती हूं और वह यह है कि जब भी कहीं इतना बड़ा नरसंहार हुआ है तो सदन की चेयर की तरफ से प्रस्ताव ला कर हमेशा इस तरह के नरसंहार की निन्दा की गई है इसलिए एक ओर जहां सरकार से मेरी प्रार्थना है, एक आखिरी निवेदन आपसे भी करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करूंगी कि नन्दी ग्राम की इस हिंसा की निन्दा करते हुए एक निन्दा प्रस्ताव अथवा भर्त्सना प्रस्ताव चेयर की ओर से आना चाहिए और सर्वसम्मति से वह पारित होना चाहिए। यही कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करती हूं।

DR. K. KESHAVA RAO (Andhra Pradesh): Sir, I must clarify ...(*Interruptions*)... It is because the record should be set straight ...(*Interruptions*)... Let me submit that I did say whatever my sister said. She has rightly quoted. But, she has quoted me out of context. So, what I am trying to say is, in the first question, when the State Government...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: There is no speech. नहीं, नहीं, आपने कह लिया, मैंने आपको मौका दिया ...(**व्यवधान**)... मैंने आपको मौका दिया, then, you have said that she has quoted out of context. That has been taken on record. I cannot allow you to make a speech...(*Interruptions*)...

DR. K. KESHAVA RAO: Sir, I just want to add one sentence, only to drive home the point that this Government, instead of depending on arms, should depend on dialogue and discussion and such discussion and dialogue got the results rightly in Andhra Pradesh. That is what I was trying to say.

श्री सीताराम येचुरी: उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि हमारा नाम हमारे नम्बर से पहले ही बुलाया गया और कांग्रेस की तरफ से भी हमें यह जगह दी गई। सबसे पहले अपनी बात मैं एक सवाल से शुरू करना चाहता हूं। जब इसके बारे में चर्चा करने की बात पहले दिन से ही आ रही थी, जिस दिन यह सदन ऑबिचुरी रैफरैंस के सवाल पर स्थगित हुआ था, तभी से हम कह रहे थे कि हमारे संविधान के चलते हुए और परम्परा को ध्यान में रखते हुए स्टेट या राज्यों के लॉ एंड ऑर्डर के सब्जैक्ट को पार्लियामैंट में डिस्कस करना उचित नहीं है, लेकिन नन्दी ग्राम के सवाल को एसईज़ेड के सवाल के साथ जोड़ का आप डिस्कस करिए या बढ़ती माओवादी हिंसा के साथ जोड़कर discuss कीजिए। अगर यह बात वे पहले दिन मान लेते तो उनको दो दिन के disruption का मौका नहीं मिलता। अगर यह दो दिन का समय बर्बाद हुआ तो उसके लिए मुख्य कारण यही है कि अगर यह बात वे पहले दिन मान लेते तो शायद हमारा दो दिन का समय बच जाता। ...(**व्यवधान**)... सुषमा जी, मैंने आप को ज्यादा नहीं टोका। इसलिए मैं यह पहले स्पष्ट कर दूं कि हमारी चर्चा से कहीं दूर भागने की इच्छा कभी नहीं थी। हम चाहते थे कि चर्चा हो क्योंकि फिर हम सत्य बता पाते। महोदय, सुषमा जी ने कहा कि जो भी कहेंगी सत्य कहेंगी, लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि सत्य के अलावा और कुछ नहीं कहेंगी। उन्होंने सत्य के अलावा और बहुत कुछ कहा और सत्य के अलावा जो कुछ भी कहा गया, उसको मैं तर्क का आधार देकर समझाऊं कि आखिर वहां पर यह हिंसा क्यों हुई?

महोदय, सबसे पहली बात हम इस हिंसा की निंदा करते हैं। हम नहीं चाहते कि वहां पर हिंसा होनी चाहिए या कहीं और होनी चाहिए। वहां पर 3 जनवरी से लेकर आज तक जो घटनाएं हो रही हैं, ये सब नंदीग्राम में और बंगाल में नहीं होनी चाहिए थीं, लेकिन इस की निंदा करते हुए हम यह जानना चाहेंगे और सदन को भी अवगत करवाना चाहेंगे कि आखिरकार यह क्यों हुआ? अब जब हम इस बात पर आते हैं तो सबसे पहली बात यह कि हम इस पर एस॰ई॰जेड॰ के सवाल के साथ जोड़कर चर्चा कर रहे हैं और यह कहा भी गया कि जब एस॰ई॰जेड॰ का सवाल वर्ष 1998 में आया था तो शायद एन॰डी॰ए॰ की सरकार नोटिफिकेशन के थ्रू शुरू करवाने की बात कर रही थी। इसका कानून बाद में बना जब यू॰पी॰ए॰ की सरकार आई और कानून बनने के समय अनुभव मिले कि उसके अंदर कई सारी आपत्तियां आईं, जिनके बारे में हम आज भी सरकार से कह रहे हैं कि वह उनको सुधारे। सर, इन आपत्तियों में 4 मुख्य बातें जिन्हें हम चाहते हैं, नंदीग्राम के संदर्भ में ही नहीं बल्कि बाकी देश के अंदर भी जितनी घटनाएं घट रही हैं, उनको ध्यान में रखते हुए इन चार क्षेत्रों के अंदर संशोधन करने की जरूरत है। सबसे पहली बात उसमें land acquisition की आती है। वह आज भी जिस कानून के तहत हो रहा है वह 1894 में पारित हुआ था और आज आजादी के 60 साल के बाद भी आपके पास कोई कानून नहीं है कि land acquisition किस आधार पर होगा? उसका compensation जिन लोगों का संदक है, उनके लिए क्या होगा, जिनकी land ownership नहीं है, लेकिन उस land पर वह जीवित हैं, उन लोगों का क्या होगा? हम इन चीजों के बारे में हर समय कह रहे थे कि एक नया कानून ले आइए, वह नहीं माने जब आप सरकार में थे और यही दबाव हम इन पर डाल रहे हैं। अब एक ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स बनाया गया है जोकि अच्छी बात है और इन चीजों पर चर्चा कर के हम एक नतीजे पर पहुंच सकते हैं।

सर, दूसरा सवाल एस॰ई॰जेड॰ को लेकर यह है कि आज जिस तरीके से एस॰ई॰जेड॰ के अंदर जमीन दी जा रही है, उसके अंदर पहले था कि सिर्फ 25 प्रतिशत उत्पादन के लिए होगी, बाकी सब डवलपर्स के हाथ में दी जाएगी। बाद में झगड़कर उस को 50 परसेंट किया गया, लेकिन यह जो 50 परसेंट किया गया है, हम नहीं चाहते कि यह रियल एस्टेट माफिया के हाथों में एस॰ई॰जेड॰ के नाम पर जाए। इसलिए इसके अंदर दुरुस्तीकरण होने की जरूरत है।

सर, तीसरा क्षेत्र, जहां पर आप ने जो टैक्स कंसेशंस एस॰ई॰जेड॰ के लिए दिए हैं, उसके चलते आपके नॉन एस॰ई॰जेड॰ इंडस्ट्रियलाइजेशन का प्रोसेस distort होता जा रहा है। उसे सुधारने की जरूरत है। चौथे, एस॰ई॰जेड॰ के अंदर जो लेबर लॉज को लागू करने की बात है, वह वहां पर mandatory होनी चाहिए। सर, हमने स्पष्ट रूप से कहा है कि इन चारों क्षेत्रों में कानून जरूर पारित हुआ, हम भी उस कानून को पारित करवाने में सहायक थे, लेकिन हम यह अनुभव के आधार पर कह रहे हैं कि इन चारों चीजों के अंदर आज संशोधन की जरूरत है। सर, जब तक यह संशोधन नहीं होगा, हमने स्पष्ट रूप से कहा है, पहले की बात जो भी हो, पश्चिम बंगाल की

सरकार ने भी स्पष्ट रूप से कहा है कि जब तक ये सुधार नहीं होंगे, हमारी जहां पर सरकारें हैं कोई भी एस॰ई॰जेड॰ का प्रपोजल वहां से नहीं आएगा। इसलिए आप इस बात को स्पष्ट रूप से मान लीजिए कि यहां पर एस॰ई॰जेड॰ के साथ जोड़ नंदीग्राम के बारे में चर्चा करने की बात तो ठीक है। लेकिन आप एस॰ई॰जेड॰ के बारे में कुछ कहना भूल गए। चूंकि आप उत्तेजित थे, इसलिए सिर्फ नंदीग्राम के बारे में ही बोले, लेकिन जो मुख्य सवाल हम एस॰ई॰जेड॰ के मामले में डिस्कस कर रहे हैं, उसके बारे में आप चुप रहें। खैर, वह आप का जनवादी अधिकार है, आप उसके बारे में चुप रह सकते हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि सरकार इन चीजों के बारे में गंभीरता से सोचे।

सर, अब जहां तक नंदीग्राम का सवाल है, बंगाल के अंदर 341 ब्लॉक्स हैं और जहां नंदीग्राम के बारे में चर्चा हो रही है, वह डेढ़ ब्लॉक के हिस्से के बारे में हो रही है। इस डेढ़ ब्लॉक के आधार पर विपक्ष 356 की मांग कर रहे हैं और जो बंगाल में 341 ब्लॉक्स हैं, उनके अंदर आज हम पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि That we have recaptured Nandigram by force. Sir, our people have gone back to Nandigram. Our people, who are the legitimate owners of their houses, have gone back to their houses. Our people, who till those lands, have gone back to their own lands. The children have gone back to their own homes. And the children, who were denied schooling are now restarting their life after one year. Is it a crime for people to go back to their homes? Is it a crime for farmers to go back to till their lands? If they are charging us that we have done this through force, I am saying that we have done this by resisting the force, not by employing force; the force was employed from the other side. We have resisted that and gone back to our homes. And for 11 months, when they were deprived of their homes, when they were thrown out as refugees and left to live in these camps, not a word of sympathy was there. Are they not human beings? Should they be treated worse than cattle. But, now, when they go back legitimately to their homes, there is a great agony. There is a great outburst. And, I have stated and stated again that the entire issue of Nandigram was started when there was a proposal, as part of an all India choice, that out of nine locations, Nandigram was one of the locations for what was called the Petro-chemical and petroleum investment region. Yes, there was a proposal there for a chemical hub. Yes, there was a misapprehension amongst the people there that their lands will be acquired, but, no formal land acquisition notice was ever issued. There was a notice issued by the Haldia Development Authority, which was later rescinded, and on the 9th February, the Chief Minister of the State stated publicly and clearly that there will be no land acquisition in Nandigram.

सर, अब 3 तारीख को यह घटना घटती है, 4 और 5 तारीख को नंदीग्राम को काट दिया जाता है मतलब पूरे रास्ते काट दिए जाते हैं, ब्रिजेज काट दिए जाते हैं और उसके बाद कोई एक्सेस आपका सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के साथ नहीं होता इन 4 और 5 तारीख को। जब वहां पर पूरी कोशिश की गई पीस कमेटीस बना दें और पीस कमेटीस के माध्यम से वहां पर normalcy लाने की पूरी कोशिश की गई, जिसके लिए आल पार्टी मीटिंग्स हुई, जिन मीटिंगों के अंदर मेन अपोजीशन पार्टी को छोड़कर बाकी सभी पार्टीज के लोग शामिल हुए और उनके निर्णय के आधार पर यह तय हुआ कि तीन महीने बहुत हो गए, इस प्रांत को सिविल एडमिनिस्ट्रेशन में वापस लाना है। सिविल एडमिनिस्ट्रेशन में वापस लाने के लिए 14 तारीख को, अब विपक्ष के नेता हंसी-मजाक में उड़ा देते हैं कि वहां पर रोड बनाने के लिए पुलिस क्यों जाएगी, मगर वहां पर जब कोई जा नहीं पा रहा, तो पुलिस के संरक्षण में रोड बनाने के लिए गए। आप जब यह बताते हैं कि 14 तारीख को 14 लोगों की वहां पर हत्या हुई है, तो इन 14 लोगों में 8 लोगों की तो मौत पुलिस की गोली से हुई है, बाकी 6 लोगों की मौत कैसे हुई? आप बोलते क्यों नहीं? बाकी 6 लोग कैसे मरे? ...(**व्यवधान**)... आप सुनिए हमें। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज, उनको बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)... नहीं, नहीं। इधर से बोल दिया है, अब उनको बोलने दीजिए।

श्री सीताराम येचुरी: हमने आपको सुना, अब आप हमें बोलने दें। वहां पर जो पुलिस के ऊपर क्रास-फायर हुई, उस क्रोस-फायर में 6 लोग, इनोसेंट मारे गए। ...(**व्यवधान**)... उस क्रोस-फायर का वहीं परिणाम में बता रहा हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, उन्होंने आपको सुना, आप भी उनको सुनिए। ..(**व्यवधान**)... नहीं, नहीं। आप बैठिए, आप बैठिए। सुषमा जी ने बोल दिया है। उन्होंने जो कहना था, कह दिया है। आप बैठिए। देखिए, बीच में इस तरह नहीं चलेगा। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: सर, इस दरमियान उस समय कहा गया कि वहां पर हजारों की तादाद में लोग मारे गए, उनको डूबो दिया गया, उनको नदियों में बहा दिया गया और आज वही सभी लोग मानते हैं कि 14 लोगों की मौत हुई। हम यह नहीं कह रहे हैं कि उनके राज्यों में माओवादी हिंसा से कितने लोग मारे गए, कितने लोग मरते रहे हैं और उसके चलते हम वहां पर 356 को लागू नहीं करना चाहते, चाहे छत्तीसगढ़ में हो या कहीं दूसरे राज्य में। वह तो एक अलग मसला है, उसके बारे में अलग से चर्चा करेंगे। उधर माओवादी 55 लोगों को मार देते हैं, तो क्या वहां पर कोई घटना नहीं हुई, कोई हिंसा नहीं हुई?

सर, यहां पर 14 में से जो क्रोस-फायर में मरे, उनमें 8 पुलिस की गोली से, मैं रिपीट कर रहा हूं, सुषमा जी, कि 8 लोग जो हैं वे पुलिस की गोली से और बाकी 6 लोग दूसरों की गोली से मरे हैं। वे दूसरे कौन थे? मैं इस पर आऊंगा, सर। ...(**व्यवधान**)...

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: येचुरी जी। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is not yielding ...(*Interruptions*)... No; he is not yielding ...(*Interruptions*)...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I am not yielding.

श्रीमती सुषमा स्वराज: चिट्ठी लिखने के बाद। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: यह तो पहले दिन से हम कह रहे हैं कि ...(**व्यवधान**)... सुनिए तो। ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज, आप उनको सुनिए। उन्होंने आपको सुना है, आप उनको सुनिए।

श्री सीताराम येचुरी: सर, इस दरम्यान 5,000 से ज्यादा हमारे लोगों को घरों से उजाड़ दिया गया, जमीन से उजाड़ दिया गया, उनको रिफ्यूजी कैम्प में रखा गया और रिफ्यूजी कैम्प में ...(**व्यवधान**)... आप थोड़ा सब्र करिए। देखिए, नंदीग्राम की बात हैं और 'नंदी' के बारे में तो आप जानते हैं, आप तो भगवान में विश्वास करते हैं, भगवान 'शिव' का वाहन है 'नंदी'। अब उसको छेड़िए मत, नहीं तो 'शिवजी' की तीसरी आंख खुल जाएगी और आपकी हालत खराब हो जाएगी। ...(**व्यवधान**)... अब आप उसको छेड़िए मत, आप सुनिए, सब्र से सुनिए।

सर, आज तक, मैं बता रहा हूं, हमारे 27 लोगों की वहां पर जाने गईं और पूरी list, address के साथ और जिस दिन वे मरे, उस ब्यौरे के साथ हम यहां पर दे रहे हैं और मैं चैलेंज करूंगा कि बाकी लोग अपनी लिस्ट बताएं—कौन मरा, कहां पर मरा? हजारों लोग मर गए 14 मार्च को और आज आप कहते हैं कि सिर्फ 14 मरे और आज आप कहते हैं कि इतने लोगों को मार दिया गया, आप हमें बताइए? 27 के अलावा 2 और मरे पिछले 48 घंटों में माओवादियों के बंद के चलते। हमारे 29 लोगों की जान जाती है और हमारे 'शंकर सामंता' का घर जला दिया गया, उनका खून करके उनको मार दिया गया और मीडिया दिखाती है, यह कहते हुए कि CPI(M) की हिंसा! मरते हैं हमारे लोग, घर उजड़ते हैं हमारे लोगों के और टी॰वी॰ में दिखाया जाता है—CPI(M) की हिंसा! अब इससे ज्यादा मजाक और क्या हो सकता है।

1.00 P.M.

सर, आज मैं आपको यह कहना चाहता हूं कि वहां पर 50 से ज्यादा केस दर्ज हुए हैं, क्राइम के बारे में, रेप आदि के बारे में और इन सभी केसिस के बारे में पूरी इन्वेस्टिगेशन हो रही है और ज्यादातर में विक्टिम हम हैं। सर, यह *'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे'* वाली बात हो रही है। आज यह जो हो रहा है, इसमें असली बातों को नजरअंदाज किया जा रहा है। असली बात क्या है? एक तो राजनीति की बात है और एक बहुत ही बहुत बड़े unholy nexus की बात है। विपक्ष की नेता ने ठीक कहा, बिल्कुल ठीक कहा है कि आज वहां पर कोई भेदभाव नहीं है, सब लोग जुट गए है। बिल्कुल सही बात है, सब लोग जुट गए हैं--इस्लामिक कट्टरपंथ से RSS, BJP, तक, तृणमूल कांग्रेस से foreign-funded NGOs तक, जितने भी लोग हैं, सब लोग जुट गए हैं और जब anti-communist धारणा शुरू होती है, तो इनके जुटने की बात कोई नई बात नहीं है, हम लोग जानते हैं। जब हमें तय करना होता है, तब माओवादियों का कोई खतरा-वतरा नजर में रखा ही नहीं। अब ये पूछ रहे हैं कि क्या वहां पर कोई माओवादी थे या नहीं? अब मैं यह आपको दिखा रहा हूं, अगर आप कहें तो मैं ये सारे प्रैस क्लिपिंग्स सबमिट करने के लिए तैयार हूं और ये कहां-कहां से हैं--*Times of India, Indian Express, The Hindustan Times DNA, The Economic Times, Mail Today* और इन सभी लोगों ने स्पष्ट रूप से माओवादियों को Quote करते हुए लिखा है कि किस तरह से उन्होंने यहां पर घुसपैठ की है। एक तरफ से प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि, "Maoist violence is the single most danger for internal security in our country." हाल ही में कहा है उन्होंने, और आपके नेशनल सिक्युरिटी ऐडवाइज़र कहते हैं, जी हां, नंदीग्राम में Maoist presence है, and he is on record saying that this is there. अगर देश के प्रधानमंत्री, देश के नेशनल सिक्युरिटी ऐडवाइज़र, इन प्रैस रिपोर्ट्स को छोड़िए, अगर ये न भी छापते, लेकिन अगर ये लोग ऐसी बातें कह रहे हैं, देश का इंटिलिजेंस ब्यूरो क्या कहता है। अगर आप अनुमति दें तो मैं पढ़कर सुनाता हूं 'DNA' में यह छपा है—"The Intelligence Branch has come to the conclusion that arms and ammunitions are being sent to the activists of the *Bhumi Ucched Pratirodh Committee* spearheading a movement to retain control over Nandigram.' This is the IB report. The Home Minister is here. He may please clarify this. And here what does they say? CRPF के बारे में यह कह रहे थे, and this is a quotation from a Maoist leader which appeared in the mainstream media. It says, "The Maoists stepped into Nandigram in January, 2007 and quickly put together a party unit. They rustled up a 350-strong peoples' militia and fought." It also goes on to say, "The ammunition was mostly supplied by local Trinamool Congress leaders." It is all on recrod. If you wish, I can submit it to you. How have they got this ammunition? The Defence Quarterly, the most respected Defence journal in the country, says, "As recent as in October, 2006, the Indian Army recovered a massive cache of State-manufactured arms and ammunitions in the eastern State of Calcutta. Three people including a soldier were arrested in connection with the seizure of arms. The hoard included anti-person mines and ammunition". Again according to an October 3rd 2006 BBC report, an Army spokesman said, "The cache of arms was meant for Maoist rebels and other terrorist groups active in and around eastern West Bengal State".

SHRI S.S. AHLUWALIA: It is published only in your newspapers?

SHRI SITARAM YECHURY: We have quoted it and I shall give you the original. At least, have that much faith.

Sir, I have quotations from every single major newspapers. The Indian Express has quoted the Maoists' mouthpiece, called the Biplavi Jug—'The Revolutionary Era' in English—which says, "the struggle now is no longer just about land acquisition or a fight between parties; it is a battle against the State". This, Sir, is their express desire; the Maoists have openly said it.

The Economic Times openly tells you of a Maoist document in ET's possession. The newspapers has quoted them as saying, "the ruling CPM is trying to brand out struggle against the State as a battle by the Trinamool Congress to capture land under their control. Some of the Trinamool Congress leaders are also thinking in the same manner. Some Trinamool men are also

[Shri Sitaram Yechury]

trying to pose as leaders of the ongoing struggle in Nandigram. But it will be a gross mistake if someone considers the Bhoomi Uchhed Pratirodh Committee as a mere forum controlled by the Trinamool Congress to prevent land acquisition. What is going on at Nandigram is an armed battle against the State". These are all given in their documents. ये कह रहे है कि क्या प्रूफ है? इससे ज्यादा क्या प्रूफ चाहिए। वे खुद कह रहे हैं कि हम वहां पर हैं, वे खुद कह रहे हैं कि यह सब आंदोलन हमारे नेतृत्व में चल रहा है। वह खुद कह रहे हैं कि हिंसा करने के लिए हमारे पास ये हथियार हैं और ये सब चीजें वे कहां से लाए, यह तो बताएंगे नहीं, लेकिन हमारे पास हैं। यहां पर CRPF के DIG क्या कहते हैं; Asked if this indicated that the Maoists had entered Sonachura in large numbers, the DIG said, "We have found a Telugu book on military tactics among the seized literature. It indicates the presence of the Maoists". अब ये पूछ रहे हैं कि क्या प्रूफ है? इन लोगों को किसने संरक्षण दिया, ये लोग वहां पर कैसे आए और इनको कौन लाया, यह सब किसने किया? आज जब हम बता रहे हैं कि किस तरीके से माओवादियों को वहां पर आने दिया गया और पिछले 48 घंटों में नंदीग्राम के सवाल पर जो बंद उन्होंने किया, उसके अंदर पूरे देश के कई प्रांतों में जो हिंसा हुई है, उसके बारे में इन्होंने एक शब्द में भी खंडन नहीं किया है, एक बार भी चिंता नहीं की कि किस तरीके से पिछले 48 घंटों में जो बंद हुआ और हिंसा हुई, नंदीग्राम के सवाल पर रेलवे लाइनें तोड़ दी गईं और वे openly declare करते हैं कि this is the battle against the State, ये लोग जो control कर रहे हैं वहां पर, clearly establishes the fact that this is not an issue of land at all. And that is precisely the politics of it और हम लोगों को यही बात समझने की जरूरत है। मैं कांग्रेस पार्टी का शुक्रगुजार हूं कि मुझे पहले बोलने का मौका दिया गया, अगर यही attitude ये दिखाते और पहली ही CRPF भेज देते, तो मैं और ज्यादा शुक्रगुजार रहता।

उपसभापति जी, 27 अक्टूबर को स्टेट गवर्नमेंट ने CRPF भेजने की request की थी और वह 12 नवंबर को वहां पहुंची, इन दो हफ्तों में बहुत कुछ संभल सकता था, संभला होता, अगर वे पहले भी भेज देते, लेकिन CRPF को वहां भेजने में delay हुआ। इस delay की importance क्या है? यह एक Mainstream रिपोर्ट मैं पढ़ रहा हूं Maoists को quote करते हुए, उनके लीडर का नाम यहां पर दिया गया है, खैर, that is not relevant. ये कहते हैं, "The Maoists were convinced that the CRPF will eventually be sent to Nandigram. The PM can't match us but with the CRPF we would have had a hard fight..." So, we laid mines in all approach roads to Sonachura, Garchakraberia and Gokulnagar. We would have eventually given up the fight because in plain land, you cannot continue armed struggle for long, but by then, the CPI(M) would have been destroyed in East Midnapore."

So, that is the political objective—destruction of CPI(M)—and for this destruction, who are all reigned together? It is from Islamic fundamentalists to the RSS, from the Trinamool Congress to the foreign funded NGOs and all of that under the leadership of the Maoists. Under the leadership of the Maoists, they are all together, and this is the grand alliance that is taking place, which has been ably supported by various sections of media. I would come to that later. But, this is not new for us. We have seen this happening before. It happened almost a decade ago. सर, केसपुर में शुरू हुआ था, आज बंगाल में जाइए तो कहते हैं कि केसपुर लाइन। केसपुर लाइन क्या है? पंशकुरा में हुआ था, गरबेटा में हुआ था और इन सबके अंदर यह लाइन क्या है? एक राजनीतिक दल की शरण में, आज हथियारबंद माओवादी या आतंकवादी, आप जाएंगे किसी इलाके में तो उस इलाके के अंदर टेरर के आधार पर लोकल लोगों को वहां से भगाएंगे, वहां पर टेरर के अधार पर अपने राजनीतिक अस्तित्व को बनाने के लिए इस तरीके की हिंसा का इस्तेमाल करते हुए, वे इस तरीके की राजनीति करते आए। यह बंगाल के अंदर पहली बार नहीं हो रहा है, पहले भी तीन बार हो चुका है और यह चौथी बार है। पहले तीनों बार जैसे वे लोग हारे, इस बार भी वे लोग हारेंगे और वहां पर जनतंत्र रहेगा, यह स्पष्ट बात हमें भी समझनी है। इसलिए हम जो यहां पर कहना चाहेंगे कि इन माओवादियों को आज किस आधार पर शरण दे रहे हैं। आप यह भूल रहे हैं कि आपको अपने

राजनीतिक स्वार्थ के चलते अपने देश की भलाई, क्या होगा, क्या नहीं होगा, की चिंता कभी नहीं रही और न हम चाहते हैं कि वह उसके बारे में सोचे ...(**व्यवधान**)...

श्री रुद्रनारायण पाणि (उड़ीसा): *

श्री उपसभापति: श्री पाणि जी, आप क्या कर रहे हैं, आप बैठिए। रिकार्ड में कुछ नहीं जाएगा। जरूरी नहीं है कि आप उठकर बोलें। मि० पाणि, आप बहुत गलत कर रहे हैं, आप बैठिए, लॉ सबके लिए है, आपके लिए अलग नहीं है।

श्री सीताराम येचुरी: सर, इसलिए मैं कह रहा हूं कि हमारे देश के अंदर यह एक larger battle है और यह बात जो प्रधान मंत्री जी ने कही, उस बात को हम भी मानते हैं कि अगर यह माओविस्ट हिंसा बढ़ रही है तो इसके बारे में यह क्या कह रहे हैं और आप क्या कर रहे हैं और किस तरीके से उसको टेकल करना है और बाकी पोलिटिकल पार्टीज़ से हमारी अपील यह है कि अपने राजनीतिक स्वार्थ को ध्यान में रखते हुए इस तरीके की ताकतों को पनाह न दें। सुषमा जी कई बार हमसे पूछ रहे थे कि आप नेपाल जाएंगे तो उनसे बातचीत करेंगे और यहां पर उनका विरोध कर रहे हैं, बिल्कुल सही है, नेपाल के अंदर बातचीत करेंगे और यहां पर भी बातचीत करेंगे अगर वे हथियार छोड़े। 1967-68 में वह इसी बात पर हमारे पार्टी से अलग हुए थे क्योंकि हमने उनके हथियारबंद संघर्ष का विरोध किया था, उस समय से हम कह रहे थे और आज भी हम कह रहे हैं ...(**व्यवधान**)... सुनिए, सुनिए, आपने सवाल उठाया तो जवाब भी सुनिए।

श्री उपसभापति: सुनिए, सुनिए। आपको सुनना भी चाहिए, केवल बोलना ही नहीं, सुनना भी चाहिए।

श्री सीताराम येचुरी: उपसभापति महोदय, जहां पर भी माओवादी हथियार छोड़कर डेमोक्रेटिक मेनस्ट्रीम में वापस आने के लिए तैयार है, वहां पर सीताराम येचुरी बात करने जरूर जाएगा, चाहे वह इंडिया में हो या नेपाल में हो।

श्रीमती सुषमा स्वराज: नेपाल में क्यों छोड़े थे ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: नेपाल में छोड़े थे, उसके बाद ही तो बातचीत, वार्तालाप शुरू हुई। अब आप उनको शरण मत दीजिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: हम कहां शरण दे रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सीताराम येचुरी: अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए आज ये प्रोत्साहन दिए जा रहे हैं। अब intellectuals से भी बात हुई। ...(**व्यवधान**)... माफ कीजिएगा, आज जो यह खतरा देश के सामने है, उस खतरे को नजरअंदाज करते हुए आप अपनी राजनीतिक स्वार्थ के लिए उन्हें प्रोत्साहन दे रहे हैं। आज जब अपना देश भुगत चुका है, इन उग्रवादियों के हम कई बार शिकार हुए हैं, हमारे दो-दो प्रधान मंत्रियों की हत्या हुई, इस देश के महात्मा की भी हत्या हुई। ...(**व्यवधान**)... और आप एक तरफ इंटरनल सेक्युरिटी के बारे में बड़ी चिंता व्यक्त करते हैं दूसरी तरफ से माओवादियों को प्रोत्साहन देते हैं। सर, मैं आपके माध्यम से यह evidence भी देना चाहूंगा कि एल०टी०टी०ई० की ट्रेनिंग लेकर और ...(**व्यवधान**)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा): *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. (*Interruptions*) Nothing will go on record.

श्री विनय कटियार (उत्तर प्रदेश): *

श्री उपसभापति: आप बैठिए। ..(**व्यवधान**)... कटियार जी, आप बैठिए। ..(**व्यवधान**)...

SHRI N. JOTHI: *

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jothi, you have been keeping silent. Why are you ...*(Interruptions)*... So far you have been keeping silent, please sit down. *(Interruptions)*

SHRI N. JOTHI (Tamil Nadu): Sir, your own friends are encouraging ...*(Interruptions)*... Your own friends from Left and Right ...*(Interruptions)*...

---

*Not recorded

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down.

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, the basic point is that as far as Nandigram is concerned, वहां पर जो भी घटनाएं घटी हैं पिछले महीनों में, वैसा नहीं होना चाहिए था। यहां पर जो जिक्र किया गया कि बहुत सारे बुद्धिजीवी, बहुत सारे लोग उतर आए, इसका मतलब क्या है? जितने लोगों के नाम लिए गए, उनमें से कोई हमारी पार्टी का सदस्य नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: अशोक मित्रा थे।

श्री सीताराम येचुरी: नहीं, आज नहीं हैं। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उन्होंने कहा था ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी: फिर वही ...अब आपको ज्यादा पता है, तो हम क्या करें? ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं पढ़ दूं?

श्री सीताराम येचुरी: नहीं, पढ़ने की कोई जरूरत नहीं है, हमने पढ़ा है। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: सुषमा जी, उनको बोलने दीजिए। ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी: और उतनी बहुत अंग्रेजी हमें भी आती है। ...(व्यवधान)... उतनी बहुत तो हमें भी आती है। अब इसमें हमारा यह कहना है कि उसी के अगले दिन, इतनी बड़ी तादाद में, उतने ही intellectuals, उतनी ही general public ने कोलकाता में रैली की, बारिश के बावजूद। अब सवाल यह है कि जनतंत्र में आप अपनी राय रखिए, इसमें कोई हमारा विरोध नहीं है। आप अपनी राय रखिए, अपनी राय कहिए, लोगों के बीच में जाइए अपनी राय लेकर, लेकिन ये दर्द-भरी कहानियां हमने सुनी हैं, उनमें से कई लोग हमारे होंगे सुषमा जी, जो आपने पूछा नहीं। अब 29 लोग अगर मारे गए और पांच हज़ार से ज्यादा अगर हमारे ...(व्यवधान)...

श्री दिनेश त्रिवेदी (पश्चिम बंगाल): इतने लोगो को आप मार रहे हैं ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी: अब ये आवाज़ कहां से आ गई? ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: वे अपनी बात बोलेंगे। ...(व्यवधान)...

श्री सीताराम येचुरी: सर, एक गंभीर बहस चल रही है और यह कौन सी आवाज़ आ गई बीच में?

श्री उपसभापति: वह आवाज़ आएगी, लेकिन बाद में।...(व्यवधान)...

श्री दिनेश त्रिवेदी: यह आवाज़ है डेमोक्रेसी की। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं त्रिवेदी जी, आप बैठिए। आपका समय आएगा, तब बोलिएगा ...(व्यवधान)...

SHRI SITARAM YECHURY: Sir, I am concluding. In the last eleven months whatever has happened in Nandigram is actually a direct political challenge to destabilise an elected Government there, and, that is precisely the logical conclusion that they all want to lead up to seeking imposing President's Rule there. The destablisation of an elected Government—if this is permitted by the use of extremist forces and Maoist violence—is something that is not in the interest of India; forget West Bengal, forget CPI (M). We are playing with fire. If you are stoking them and actually patronizing and supporting them in order to settle Petty political scores here and there, you are actually playing with the future of the entire country. So, Nandigram is an abject lesson for all of us. All this evidence that I have given shows how the Maoists penetrated, how they have gone into each of those villages, and, how they themselves mocked at the Trinamool

Congress saying, "They think they are the leaders, they are not; but we are the ones who are actually controlling."

When they have given an open declaration that this is a battle against the State, it has nothing to do with the land, it has nothing to do with the area, this is an open declaration of an armed action against an Indian State. If this is ignored, if that is not taken serioulsy because of your petty politics of trying to settle scores with the CPI (M) or others, I think, the larger picture is being lost for which we all will have to pay a heavy price.

Therefore, with the responsibility that is required of all of us, we will have to take up this issue in the larger context. People who had actually been driven out of their homes have gone back to their homes, as I said, not by using force but by resisting. We have gone to those places. We want peace; we want tranquility and all efforts would be made in this regard. Let me assure this House that no crime, if at all, has happened there, will go unpunished; no crime will be ignored and action would be taken. Now, let this matter be at rest with the point that this is larger question that we can only ignore at our peril and that larger issue must be kept in mind. Do not reduce it only to settle petty political scores. Keep the interest of India in mind.

This is the appeal that we have to make. I want to asure this august House that as far as CPI (M) is concerned, with the fullest confidence and commitment to the democracy that we have shown all these years and which we will continue to show, we do not want this process to be undermined. These forces must be put to check, and, that is my sincere appeal. Thank you.

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, मैं केवल एक बात कहना चाहती हूं क्योंकि मुझ पर आरोप लगाया गया कि मैंने हाउस को मिसलीड किया। ...(**व्यवधान**)... मैं सिर्फ एक सेंटेंस पढ़ना चाहती हूं। यह अशोक मित्रा जी ने कहा है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: उन्होंने यह नहीं कहा। मैं बताता हूं। उन्होंने कहा कि वे सीपीएम के नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मैं वही बता रही हूं। ...(**व्यवधान**)... मैं केवल वही बता रही हूं। यह अशोक मित्रा कह रहे हैं "Those against whom I am speaking, have been my comrades at some point of time. The party whose leadership they are adorning has been the centre of my dreams and works for the last sixty years. ...*(Interruptions)*... They have been my comrades at some point of time. ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: वह कहा है मगर वे deny कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... आपने भी सही कहा। वे उसके लिए deny कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

SHRI SITARAM YECHURY: He is never a member. ...*(Interruptions)*...

श्रीमती सुषमा स्वराज: उनके वित्त मंत्री थे। ...(**व्यवधान**)...

यह वे लिख रहे हैं, "They have been my comrades at some point of time". That Party has been in his dreams for the last sixty years. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)*... Please. ...*(Interruptions)*...

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI PRIYARANJAN DASMUNSI): Mr. Deputy Chairman, Sir I am thankful to you for giving me this opportunity ...*(Interruptions)*...